
Under CSR Support by
ipca | Foundation
ARJUN BATCH
missiongyan
CLASS 12th | HISTORY
राजा, किसान और नगर
Chapter-2 | Part-7
आरंभिक राज्य और अर्थव्यवस्थाएँ (लगभग 600 ई.पू. से 600 ई.)

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

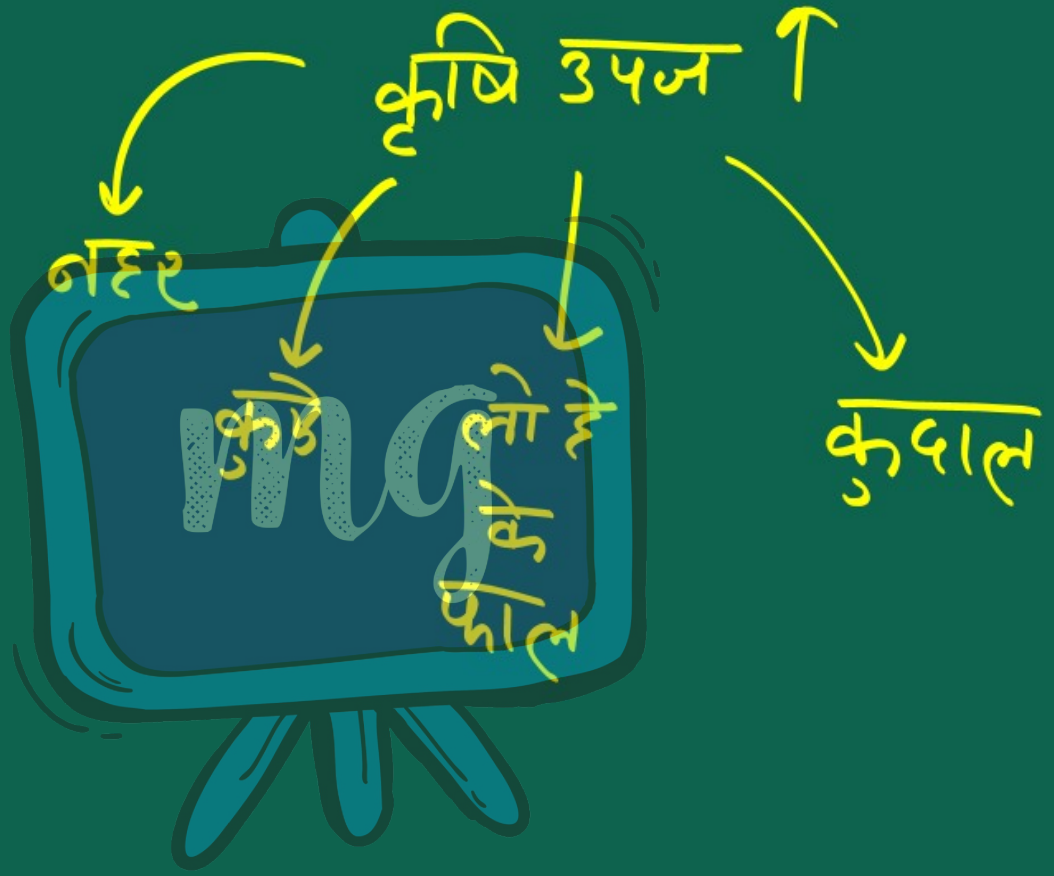

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

आज क्या पढेंगे ?

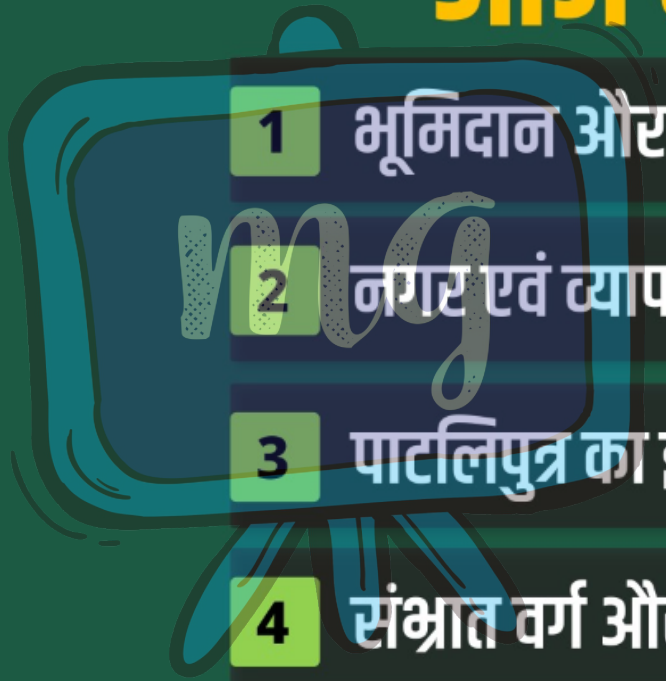

1. भूमिदान और नये संभ्रात ग्रामीण
2. नगर एवं व्यापार
3. पाटलिपुत्र का इतिहास
4. संभ्रात वर्ग और शिल्पकार

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

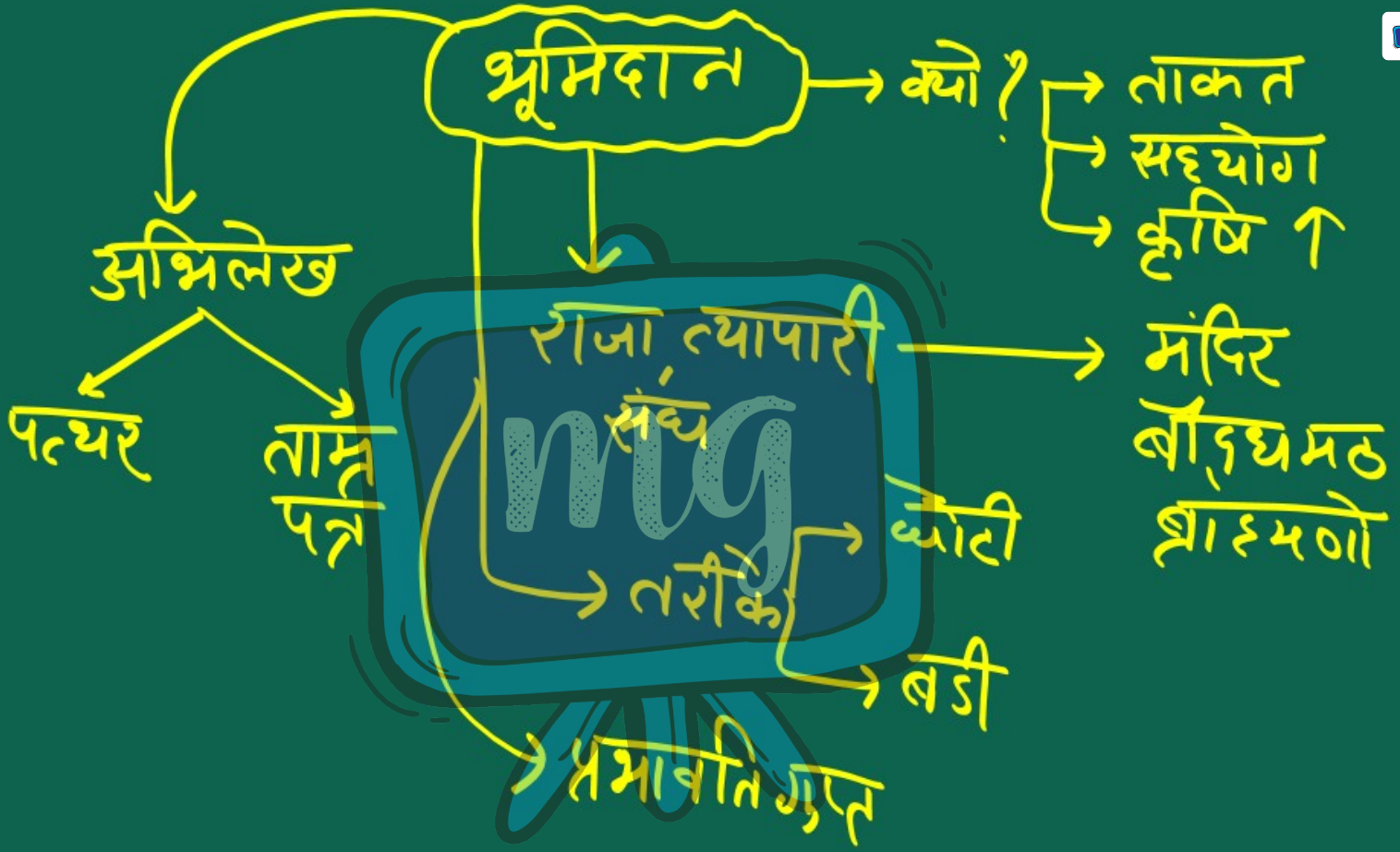

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

गुप्त काल

गुप्त वंश

चन्द्रगुप्त

↓

बेटी : प्रभावति गुप्त → शादी

तकातक

रुद्रसेन

→ भूमिदान

महिला ×

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

भूमिदान → अभिलेखों (ताम्रपत्रों)

संस्कृत
तमिल
तेलगु

लेने वालो को

धार्मिक संगठन

ब्राह्मण

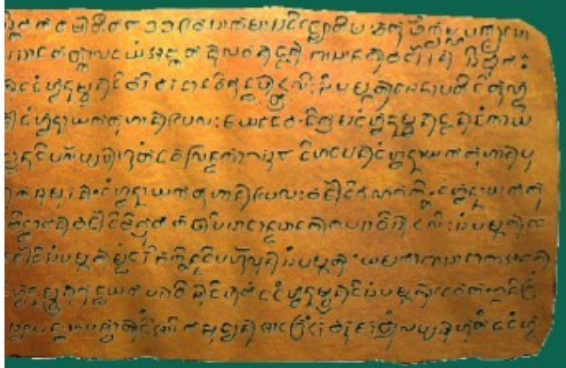

भूमिदान और नये संभ्रात ग्रामीण :-

- ई. की आरंभिक शताब्दियों से भूमिदान के प्रमाण मिले हैं।
- भूमिदानों का कई बार उल्लेख अभिलेखों में भी है।
- ये अभिलेख पत्थरों व ताम्रपत्रों पर खुदे होते थे।
- ताम्र पत्रों वाले भूमिदान के अभिलेख संभवत: भूमिदान लेने वाले को दिये जाते थे।
- ये भूमिदान साधारण तौर पर धार्मिक संस्थाओं या ब्राह्मणों को दिये गये थे।
- अधिकांश अभिलेख संस्कृत में थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. भूमिदान पर एक लेख लिखे?

Q. " क्यो दिये जाते थे?

Q. " किसको " " । " ?

Q. " भाषा क्या थी?



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



चन्द्रगुप्त II + वाकाटक राजा रुद्रसेन II

प्रभावति गुप्त

प्रभावती गुप्त द्वारा दान :-

- प्रभावती आरंभिक भारत के एक सबसे महत्वपूर्ण शासक चंद्रगुप्त द्वितीय (375–415 ई.) की पुत्री थी।
- उसका विवाह एक महत्वपूर्ण शासक वंश वाकाटक परिवार में रूद्रसैन द्वितीय से हुआ था।
- संस्कृत धर्मशास्त्रानुसार महिलाओं को भूमि जैसी संपत्ति पर स्वतंत्र अधिकार नहीं था। लेकिन एक अभिलेख के अनुसार प्रभावती भूमि की स्वामी थी तथा उसने दान भी किया था।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



First Plate : Inner Side



Second Plate : First Side

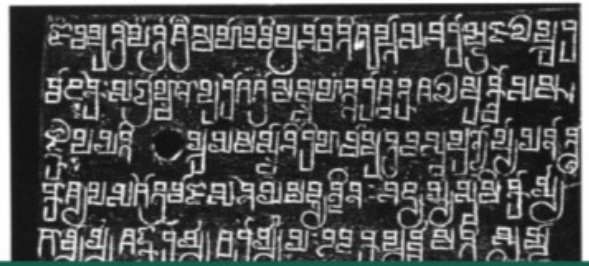

प्रभावती गुप्त और दंगुन गाँव :-

प्रभावती ग्राम कुटुंबिनों (गाँव के गृहस्थ और कृषक), ब्राह्मणों और दंगुन गांव के अन्य वासियों को आदेश देती है....

"आपको ज्ञात हो कि कार्तिक शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि को धार्मिक पुण्य प्राप्ति के लिए इस ग्राम को जल अर्पण के साथ आचार्य चनालस्वामी को दान दिया गया है। आपको इनके सभी आदेशों का पालन करना चाहिए।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



एक अग्रहार (दान वाला भूमि भाग) के लिए उपयुक्त निम्नलिखित रियायतों का निर्देश भी देती है कि इस गांव में पुलिस व सैनिक प्रवेश नहीं करेंगे। दौरे पर रहने वाले अधिकारियों को यह गांव घास देने और आसन में प्रयुक्त होने वाले जानवरों की खाल और कोयला देने के दायित्व से मुक्त हैं।

साथ ही वे मदिरा खरीदने तथा नमक हेतु खुदाई करने के राजसी अधिकार को कार्यान्वित किये जाने से मुक्त हैं।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

क्या Gift लाए ?

- ग्रामीण प्रजा + ब्राह्मण किसान (अन्य वर्ग)



शासकों को वस्तु प्रदान

- प्रधान की आज्ञाओं का पालन + कर
- देश के कई हिस्सों में

इस गांव को खनिज पदार्थ और खदिर वृक्ष के उत्पाद देने से भी टूट है।
फूल और दूध देने से भी छू ट है। इस गांव का दान इसके भीतर की संपत्ति और बड़े छोटे सभी करों सहित किया गया है।
इस राज्यादेश को 13वें राज्य वर्ष में लिखा गया है तथा इसे चक्रदास ने उत्कीर्ण किया है।

इस अभिलेख में हमें ग्रामीण प्रजा का पता चलता है इनमें ब्राह्मण किसान तथा अन्य प्रकार के वर्ग शामिल थे। जो शासकों या उनके प्रतिनिधियों को कई प्रकार की वस्तुऐं प्रदान करते थे।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- भूमि के माप में भी अंतर
  - छोटे
  - बड़े
- दान प्राप्त के अधिकारों में भी अंतराल

- अभिलेख के अनुसार गांव के लोगों को गांव के नये प्रधान की आज्ञाओं का पालन करना होता था और संभवत: अपने भुगतान उसे ही देने पड़ते थे।
- इस प्रकार के भूमिदान अभिलेख देश के कई हिस्सों से प्राप्त हुए हैं।
- क्षेत्रों में दान में दी गयी भूमि की माप में अंतर है कहीं छोटे टुकड़े तो कहीं बड़े बड़े क्षेत्र दान में दिये गये हैं।
- भूमिदान में दान प्राप्त करने वालों के अधिकारों में भी क्षेत्रीय परिवर्तन मिलते हैं।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



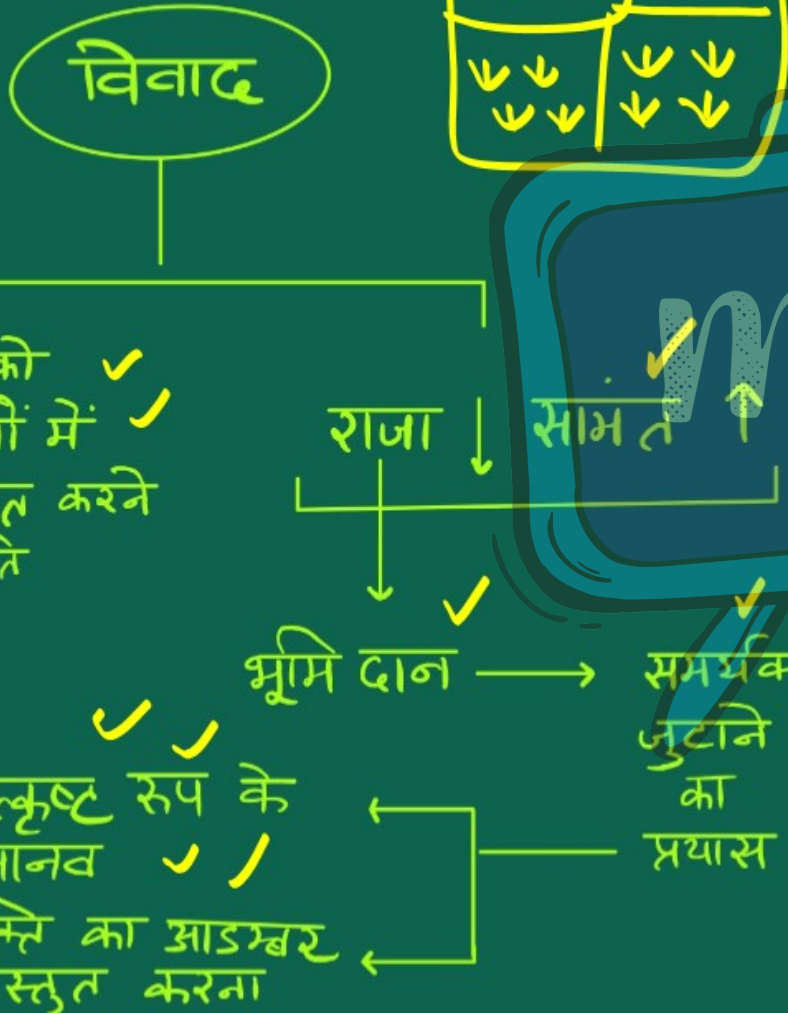

भूमिदान इतिहासकारों में भी गर्म वाद विवाद का विषय बना हुआ है।

कुछ इतिहासकारों के अनुसार भूमिदान शासक वंश द्वारा कृषि को नये क्षेत्रों में प्रोत्साहित करने की रणनीति थी।

कुछ अन्य इतिहासकारों का मानना है कि भूमिदान से दुर्बल होते राजनीतिक प्रभुत्व का संकेत मिलता है अर्थात राजा का शासन सामंतों पर दुर्बल होने लगा तो उन्होंने भूमिदान के माध्यम से अपने समर्थक जुटाने प्रारम्भ कर दिये। राजा स्वयं को उत्कृष्ट स्तर के मानव के रूप में प्रदर्शित करना चाहते थे।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- राज्य —— किसान
- पशुपालक
  संग्राहक
  मछुआरे
  शिल्पकार
  घुमन्तु कृषक

अधिकारियों + सामन्तों का नियंत्रण नहीं था।

उनका नियंत्रण ढीला होता जा रहा था इसलिए वे अपनी शक्ति का आडम्बर प्रस्तुत करना चाहते थे। भूमिदान के प्रचलन से राज्य और किसानों के बीच संबंध की झांकी मिलती है।

कुछ ऐसे भी लोग थे जिन पर अधिकारियों या सामंतों का नियंत्रण नहीं था जैसे कि पशुपालक, संग्राहक, शिकारी, मछुआरे, शिल्पकार और जगह जगह घूम कर खेती करने वाले लोग। सामान्यतः ऐसे लोग अपने जीवन और आदान प्रदान के विवरण नहीं रखते थे।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

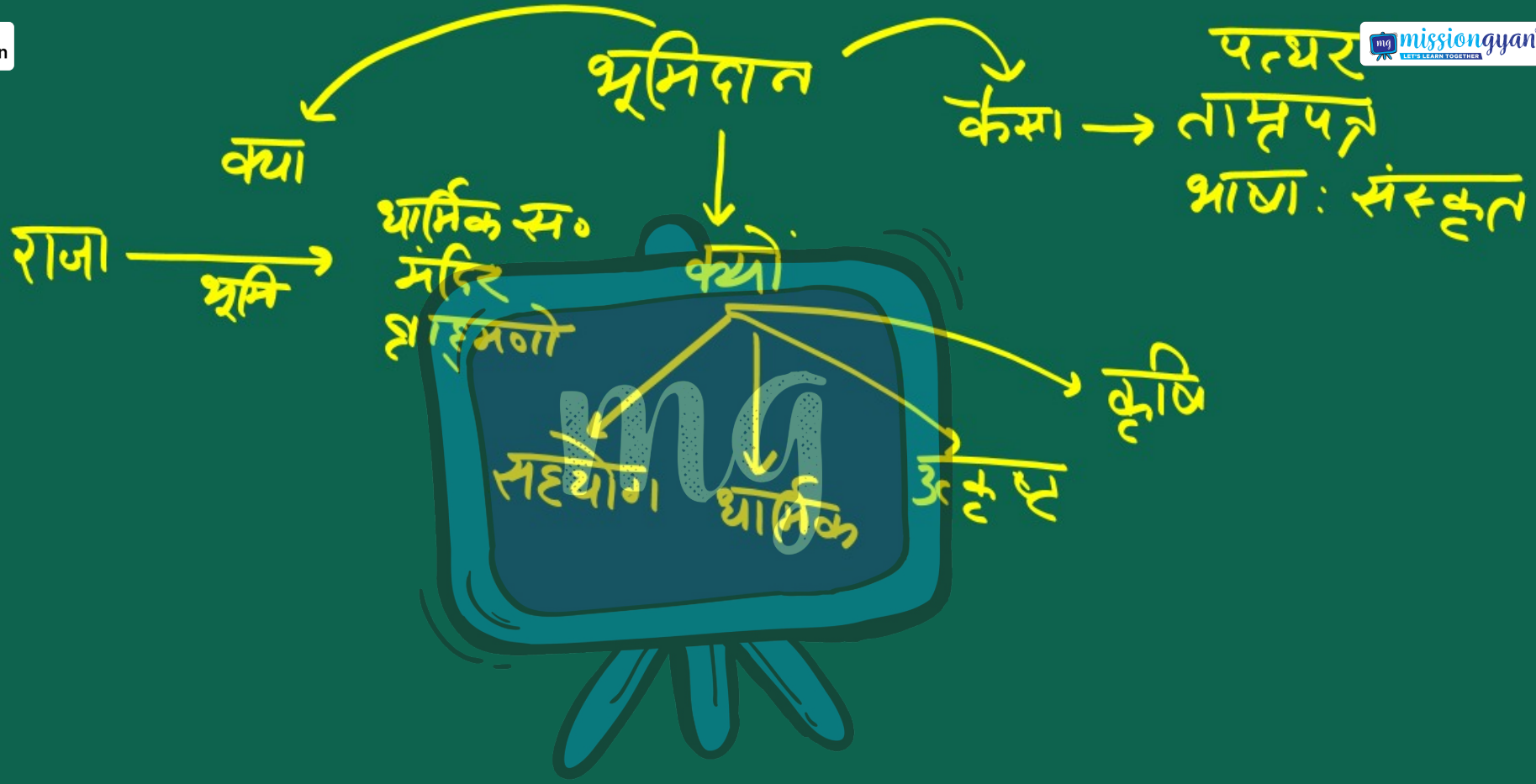

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

प्रभावती गुप्त — दंगुन भूमिदान → आचार्य धनालस्वामी



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

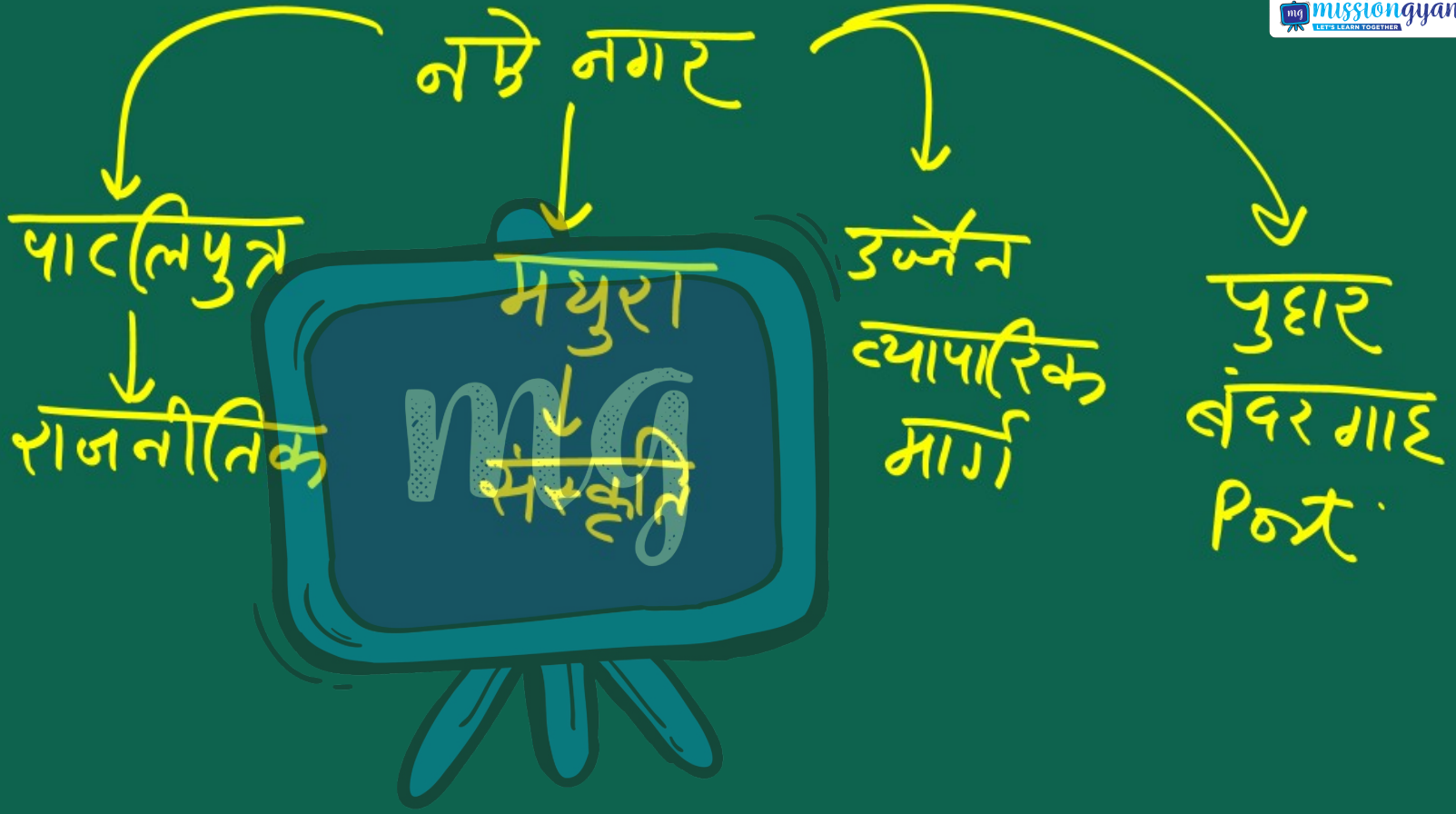

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



नगर एवं व्यापार

नए नगर :

- छठी शताब्दी ई.पू. में उपमहाद्वीप में कई नये नगरों का विकास हुआ।
- इनमें से अधिकांश नगर महाजनपदों की राजधानियाँ थे।
- प्रायः सभी नगर संचार मार्गों के किनारे बसे थे।
- पाटलिपुत्र जैसे कुछ नगर नदीमार्ग के किनारे बसे थे।
- उज्जयिनी भूतल मार्ग के किनारे बसा था।
- पुहार जैसे नगर समुद्रतट पर थे, जहाँ से समुद्री मार्ग प्रारंभ हुए।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



पाटलिपुत्र का इतिहास

प्रत्येक नगर का अपना इतिहास था। उदाहरण के तौर पर, पाटलिपुत्रा का विकास पाटलिग्राम नाम के एक गाँव से हुआ। फिर पाँचवीं सदी ई. पू. में मगध शासकों ने अपनी राजधनी राजगाह से हटाकर इसे बस्ती में लाने का निर्णय किया और इसका नाम बदल दिया।

चौथी शताब्दी ई. पू. तक आते–आते यह मौर्य साम्राज्य की राजधानी और एशिया के सबसे बड़े नगरों में से एक बन गया। बाद में इसका महत्त्व कम हो गया और जब चीनी यात्राी श्वैन त्सांग सातवीं सदी ई. में यहाँ आया तो इसे यह नगर खंडहर में बदला मिला और उस समय यहाँ की जनसंख्या भी कम थी।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

ताकतवर

पाटलिपुत्र → ऐतिहास

संभ्रांत वर्ग और शिल्पकार :–

- शासक वर्ग और राजा किलेबंद नगरों में रहते थे। यद्यपि इनमें से अधिकांश स्थलों पर व्यापक रूप से खुदाई करना संभव नहीं है, क्योंकि आज भी इन क्षेत्रों में लोग रहते हैं।
- इसके पश्चात् भी पुरावशेष प्राप्त हुए हैं। इनमें उत्कृष्ट श्रेणी के मिट्टी के कटोरे और थालियाँ मिली हैं जिन पर चमकदार कलई चढ़ी है। इन्हें उत्तरी कृष्ण मार्जित पात्र कहा जाता है। संभवतः इनका उपयोग अमीर लोग किया करते होंगे।
- इसके साथ ही सोने, चाँदी, कांस्य, ताँबे, हाथी दाँत, शीशे जैसे तरह–तरह के पदार्थों के बने गहने, उपकरण, हथियार, बर्तन, सीप और पक्की मिट्टी मिली हैं।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

अभिलेख → दान

द्वितीय शताब्दी ई.पू. आते–आते हमें कई नगरों में छोटे दानात्मक अभिलेख प्राप्त होते हैं। इनमें दाता के नाम के साथ–साथ प्रायः उसके व्यवसाय का भी उल्लेख होता है।



एक प्रतिमा की भेंट
यह मथुरा से मिली एक मूर्ति का भाग है। इस पर प्राकृत में अभिलेख है जिसमें कहा गया है कि एक स्वर्णकार धर्मक की पत्नी नागदिन्ना ने इसे एक धार्मिक स्थल में स्थापित किया था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER





- इन अभिलेखों में नगरों में रहने वाले धोबी, बुनकर, लिपिक, बढ़ई, कुम्हार, स्वर्णकार, लौहकार, अधिकारी, धार्मिक गुरु, व्यापारी और राजाओं के बारे में विवरण लिखे होते हैं।
- कभी–कभी उत्पादकों और व्यापारियों के संघ का भी उल्लेख मिलता है जिन्हें श्रेणी कहा गया है।
- ये श्रेणियाँ संभवतः पहले कच्चे माल को खरीदती थीं फिर उनसे सामान तैयार कर बाजार में बेच देती थीं।
- यह संभव है कि शिल्पकारों ने नगर में रहने वाले संभ्रांत लोगों की बढ़ती माँग को पूरा करने के लिए कई प्रकार के लौह उपकरणों का प्रयोग किया हो।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

Q. प्राचीन काल के 5 शहरों का वर्णन करें और ये महत्वपूर्ण क्यों थे ये बताइए?

Q. दानात्मक अभिलेख क्या होते हैं उदाहरण सहित बताइए?

Q. श्रेणी किसे कहा जाता है?

